दशपर्णी अर्क

(सभी तरह के रस चूसक कीट और सभी इल्लियों के नियंत्रण के लिए)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	गौमूत्र	20 लीटर
3	करंज, अरंड, सीताफल, बेल, गेंदा, तुलसी, धातूरा, आम, आक के पत्ते	2 - 2 कि.ग्रा.
4	गाय का गोबर	2 कि.ग्रा.
5	तीखी हरी मिर्च	1 कि.ग्रा.
6	हल्दी पाउडर	500 ग्राम
7	हींग	10 ग्राम
8	अदरक	500 ग्राम
9	नीम के पत्ते	5 कि.ग्रा.
10	देशी लहसुन की चटनी	1 कि.ग्रा.
11	सौंठ पाउडर	200 ग्राम

विधि: गोबर व मूत्र को पानी में अच्छी प्रकार घोल कर 2 घंटे के लिए रख दें। हल्दी का पाउडर, अदरक की चटनी व हींग के पाउडर, अदरक की चटनी, व हींग के पाउडर को अच्छी प्रकार मिला कर 24 घंटे के लिए छाया में रखें। इस मिश्रण को हिलाकर, सोंठ पाउडर, तम्बाकु का पाउडर, तीखी मिर्च व देसी लहसुन अच्छी प्रकार मिलाकर 24 घंटे के लिए रख दें। पौधों के पत्तों को इस मिश्रण में दबा दें। मिश्रण को बोरी से ढ़क कर 30 - 40 दिन के लिए रख दें व इसको सुबह - शाम घोलें। 6 - 8 लीटर अर्क को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल में छिड़काव करें। दशपर्णी अर्क का छिड़काव दोपहर के बाद करने से अधिक लाभ मिलेगा। दशपर्णी अर्क को घोलते समय नाक पर रूमाल जरूर रख लें। दशपर्णी अर्क बनाने के दौरान तथा भंडारण स्थान को बच्चों तथा गाय - बैल इत्यादि की पहुंच से दूर रखें। **इसको छः माह तक प्रयोग कर सकते हैं।**

अग्निस्त्र

(रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूंडी / इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	स्थानीय* पौधों मे से किसी एक के पत्ते	5 कि० ग्रा०
2	गौमूत्र	20 लीटर
3	तम्बाकू पाउडर	500 ग्राम
4	तीखी हरी मिर्च की चटनी	500 ग्राम
5	देशी लहसुन की चटनी	250 ग्राम

विधि : पतीले में कूटे हुए पत्ते, तम्बाकू पाउडर, मिर्च की चटनी व लहसुन की चटनी को गौमूत्र में मिलाकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। 48 घंटे के लिए रखें। सुबह - शाम घड़ी की सूई की दिशा में 2 - 3 मिनट तक घोलें। 5 ली. अग्निस्त्र 200 लीटर पानी में डाल कर 1 एकड़ में छिड़काव करें **इसको 3 महीने के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।**

*स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधे

जैसे कि दरेक, लेन्टाना, भांग, बरेयां, बिच्छूबूटी, बसूटी, बणा, कढ़ी पत्ता इत्यादि

सप्त-धान्यांकुर अर्क

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	तिल	100 ग्राम
2	मूंग दाल, उड़द दाल, लोबिया, मोठ व चने के बीज	प्रत्येक 100 - 100 ग्राम
3	गेहूं के बीज	100 ग्राम

विधि: एक कटोरी में तिल के बीजों को थोड़े पानी में रातभर भिगोकर रखें। दूसरे दिन उपरोक्त बीजों को मिलाकर रातभर के लिए पानी में भिगोकर रख दें। तीसरे दिन सातों प्रकार के बीजों को पानी से निकालकर एक पोटली में बांध कर घर के अंदर टांग दें व पानी को सुरक्षित रख दें। फिर बीजों के अंकुरित होने के उपरान्त सभी बीजों को पीस कर चटनी की तरह बना लें। 200 लीटर पानी, 10 लीटर गौमूत्र व बीजों का सुरक्षित पानी का मिश्रण तैयार करें। इसमें हाथों की सहायता से सातों प्रकार के बीजों की चटनी को लकड़ी के डण्डे की सहायता से मिला दें। घोल तैयार होने के बाद इसको बोरी से ढक कर दो घंटे तक रख दें। इसके बाद इसको कपड़े से छान लें। इस प्रकार सप्त - धान्यांकुर अर्क उपयोग के लिए तैयार है। इस अर्क को 48 घंटे के अन्दर - अन्दर उपयोग करें। फसल में इसका उपयोग दानों की दुग्धावस्था में, बाल्यावस्था (छोटी फलियों) में तथा फूलों की फसल में कली अवस्था में करें।

लाभ

- सप्त - धान्यांकुर अर्क छिड़कने से दानों पर चमक आती है।
- फलों का गिरना बन्द होता है।
- फली में दाने पूरे भरते हैं।
- दानों का आकार व भार बढ़ता है।
- दानों में सुगन्ध बढ़ती है।
- प्राकृतिक आपदाओं को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।

विशेष: गोबर एवं गौमूत्र

केवल देसी गाय के गोबर का उपयोग करें। आधा गोबर बैल का मिला सकते हैं लेकिन अकेले बैल का गोबर नहीं होना चाहिए। जर्सी और होल्स्टीन का मूत्र एवं गोबर वर्जित है। गोबर जितना ताजा एवं गौमूत्र जितना पुराना होगा उतना ही अच्छा होगा। जो गाय दूध नहीं देती है उसका गोबर व मूत्र उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क:

जिला - परियोजना निदेशक (आत्मा)

विकास खण्ड स्तर में बी.टी.एम. एवं ए.टी.एम.

प्रदेश सम्पर्क : राज्य परियोजना कार्यान्वयन ईकाई, कृषि भवन, शिमला - 5

दूरभाष : 0177 283 0767, ईमेल : spnf-hp@gov.in

श्री जयराम ठाकुर
मा० मुख्यमन्त्री

डॉ० रामलाल मारकण्डा
मा० कृषि, मन्त्री

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

(प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना)

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश

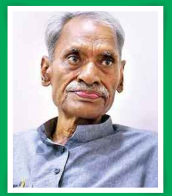

पद्मश्री श्री सुभाष पालेकर

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण
जहर - रोग - कीट - कृषि कर्ज - चिन्ता मुक्त
सही अर्थ में किसान - बागवान को समृद्ध, खुशहाल,
स्वावलम्बी एवं आय दोगुनी देने वाली
खेती ही 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' है।

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई, कृषि भवन, शिमला - 5

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पद्धति से फसलों को उगाने में किसी भी प्रकार की रासायनिक खादों, कीटनाशकों इत्यादि के प्रयोग के बिना सफल एवं सतत् खेती कर किसान जहर मुक्त खाद्यान्न का उत्पादन कर सकता है। इस तरह वह खेती उत्पादन लागत को बहुत ही कम या शून्य कर अपने परिवार की आर्थिकी को बढ़ा सकता है। साथ ही समाज के अन्नदाता के रूप में स्वस्थ भोज्य पदार्थ उपलब्ध करवा कर 'स्वस्थ भारत–समृद्ध परिवेश' के स्वप्न को भी साकार करने में अपनी समर्थ भूमिका अदा कर सकता है।

मुख्य फसल की लागत का मूल्य अन्तर्वर्ती/सह फसल के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना ही 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' है। इसमें खेती के लिए आवश्यक कोई भी संसाधन बाजार से नहीं खरीदना है। इन सभी संसाधनों या आदानों की निर्मिती घर में, खेत में या गांव में ही की जाती है।

प्राकृतिक खेती क्यों एवं इसके लाभ :

1. बाजार पर कोई निर्भरता नहीं। खेती में आवश्यक सभी इनपुट या तो गांव में उपलब्ध हैं या घर पर ही तैयार किए जा सकते हैं।
2. रासायन आधारित तत्वों का खेती में प्रयोग न करना। पर्यावरण, मिट्टी, और जल प्रदूषण पर नियंत्रण। यह प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों को संरक्षित करता है।
3. मृदा की उर्वरता, मिट्टी के जैविक पदार्थ और मिट्टी में कार्बन की बहाली करना। इस पद्वति से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ती है और स्वदेशी गाय के गोबर और मूत्र अधारित सूत्र ही प्राकृतिक खेती की कुंजी है।
4. कीट प्रबंधन के लिए वनस्पतियों और प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग से खेती की लागत को कम किया जा सकता है।
5. यह स्थानीय बीजों के उपयोग को बढ़ावा देती है जो स्थानीय वातावरण के अनुकूल हैं।
6. अंतर–फसल और बहु–फसल। कम अवधि वाली अंतर–फसल से होने वाली आय मुख्य फसल के लिए किसानों को कार्यशील पूंजी प्रदान करती है और किसानों की आय को बढ़ाती है।
7. बहु–फसल कृषि मॉडल में पेडों को शामिल करने से सालभर आय मिलने के साथ जोखिम भी कम हो जाता है। इससे निरंतर हरा आवरण मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है। इससे आच्छादन होता है और पानी का नुकसान भी कम होता है।
8. प्राकृतिक खेती में कम पानी की जरूरत। आच्छादन और वाफ़्सा जल उपयोग क्षमता को बढ़ाता है तथा भू–जल आवश्यकताओं को कम करता है।
9. प्राकृतिक खेती के तहत फसलें सूखे के दौरान भी लंबे समय तक बेहतर तरीके से खडी रहती हैं और भारी बारिश का सामना भी अच्छे से कर सकती हैं।
10. जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में प्राकृतिक कृषि पद्वति सबसे अधिक जलवायु हितैषी है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के मुख्य पाँच स्तंभः

1. **बीजामृतः** देसी गाय के गोबर और मूत्र से तैयार होने वाला अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणुओं का घोल जिससे बीजों को संस्कारित किया जाता है।
2. **जीवामृतः** अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणुओं का उत्तम जामुन जिसे देसी गाय के गोबर और मूत्र से तैयार किया जाता है।
3. **आच्छादनः** फसलों के बचे हुए अवशेषों को मिट्टी के उपरी परत पर बिछाकर पानी को वाष्पित होने से रोकता है और मिट्टी में ह्युमस का निर्माण करता है।
4. **वाफ्साः** मिट्टी के अंदर एक ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार करना जिसमें पानी और हवा के कणों की मात्रा एक सम्मान रखी जाती है।
5. **सह–फसलः** मुख्य फसल की लागत का मूल्य अन्तर्वर्ती/सह फसल के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पद्धति में प्रयोग होने वाले घटक

बीजामृत
(100 कि० ग्रा० बीज के लिए)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	पानी	20 लीटर
2	गौमूत्र	5 लीटर
3	गोबर	5 कि० ग्रा०
4	अनबुझा चूना	50 ग्राम
5	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : इन सभी सामग्रियों को अच्छी तरह से ड्रम में घोलें। इस घोल को 24 घंटे बोरी से ढक कर छांव में रखने के बाद बीजों को संस्कारित करें। ध्यान रहे इस दौरान इस घोल को सुबह-शाम, 2-2 मिनट घोलना है। **बुआई के 24 घंटे पहले शोधन करना चाहिए।**

जीवामृत
(एक एकड़ (5 बीघा/10 कनाल) भूमि के लिए)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	गौमूत्र	10 लीटर
3	गोबर	10 कि० ग्रा०
4	गुड़ या मीठे फलों का गूदा	1 कि० ग्रा०
5	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि० ग्रा०
6	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : इन सभी सामग्रियों को अच्छी तरह से ड्रम में घोलें। घोल को घड़ी की सुई की दिशा में 2-3 मिनट तक घोलें। ड्रम को बोरी से ढक कर 72 घंटे तक छांव में रख दें। सुबह शाम 2-2 मिनट घोलें। **इस घोल का उपयोग 10 दिन के अंदर करें।**

घनजीवामृत
(एक एकड़ (5 बीघा/10 कनाल) भूमि के लिए)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	गौमूत्र	आवश्यकतानुसार
2	गोबर	200 कि० ग्रा०
3	गुड़ या मीठे फलों का गूदा	1 कि० ग्रा०
4	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि० ग्रा०
5	खेत के मेढ़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श पर फैलाएं फिर इसके बाद गुड या फलों का गुदा व बेसन को डालें। अब मेंढ की मिट्टी के साथ गौमूत्र भी मिला लें। अब सामग्रियों को फावड़े से मिलाएं फिर 2-4 दिन तक छायादार स्थान में सुखाऐं। अच्छी तरह सुखाने और बारीक करने के बाद खेत में उपयोग करें। **इसका उपयोग एक साल तक किया जा सकता है।**

फसल सुरक्षा प्राकृतिक कीटरोधक

नीमास्त्र
(एक एकड़ (5 बीघा/10 कनाल) भूमि के लिए)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	पानी	100 लीटर
2	गौमूत्र	5 लीटर
3	गोबर	1 कि० ग्रा०
4	नीम या स्थानीय* रूप से उपलब्ध पौधों में से किसी एक की हरी पत्तियां या सूखे फल	5 कि० ग्रा०

विधि : ड्रम में नीम की पत्तियों की चटनी, और गोमूत्र व गोबर डालें। इन सभी सामग्रियों को डंडे से घोलकर जूट की बोरी से ढ़क दें। इस मिश्रण को 48 घंटे के लिए छोड़ दें और इस दौरान सुबह-शाम 2-2 मिनट घोलें। तैयार होने के बाद इसका छिड़काव करें।
नीमास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते है।

ब्रह्मास्त्र
(बड़ी सूंडियों/ इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	गौमूत्र	20 लीटर
2	(अ) आम, अमरूद, अरंडी के पत्तों की चटनी (ब) स्थानीय* पौधों मे से किसी दो के पत्तों की चटनी	2-2 कि० ग्रा०

विधि : पत्तों की चटनी को गौमूत्र में डालकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। 48 घंटे तक ठंडा होने के लिए रख दें। 2.5-3 लीटर घोल को 200 लीटर पानी में मिला कर 1 एकड़ फसल पर छिड़काव करें। **घोल का प्रयोग 6 माह तक किया जा सकता है।**

फफूंदनाशक
(फफूंद नियंत्रण के लिए उपयोगी)

क्र०	सामग्री	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	खट्टी लस्सी (4-5 दिन पुरानी)	5 लीटर

विधिः पानी व खट्टी लस्सी को अच्छी प्रकार से मिलाकर 1 एकड़ छिड़काव करें।
नोटः यह विषाणु (वायरस) नाशक भी है।